मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-12, अङ्क-2 पण्डित कैलाशचन्द्र जैन स्मृति अङ्क (वि.नि.सं. 2539) फरवरी 2013

स्व. पण्डित कैलाशचन्द्रजी के प्रति

गणधरवत् श्री पूज्य श्री ने.....

तीर्थंकरवत् कहानगुरु की दिव्यवाणी में बरसा जैन धर्म।
गणधरवत् श्री पूज्य श्री ने बतलाया जैन धर्म का मर्म॥
सुख-दु:ख तेरा कर्माश्रित नहीं, कर्माधीन नहीं जीवन,
कर्म नहीं टिकते जहाँ निज में, अर्चन निज में अर्पन॥
पुरुषार्थ से काम हो तो मुक्ति है नहीं है बंधन।
कर्म कटावें चक्कर कैसे तेरी सत्ता से भिन्न है द्रव्यकर्म॥ गणधरवत्......
क्या पता कब मौत की आँधी से जीवन दीप बुझे।
देह तो एक ओस कण सी कब गिरे और कब मिटे॥
एक पल में खूब बढ़े और एक पल में सब नशे।
बाहर की घुड़दौड़ छोड़ो तेरी सत्ता से भिन्न है नोकर्म॥ गणधरवत्......
वस्तु एक है रूप अनेक हैं स्याद्वाद से सब कुछ जान
चिदानन्द परमानन्दमय तू अभी है तू भी सिद्ध समान।
अनन्ती शक्ति का तू धारी अनन्त गुणों का तू गोदाम
आनन्द का पर्वत चेतन रत्नाकर, अभी है तुझमें केवलज्ञान।
सुख का सागर शान्ति का सागर, दु:ख का अकारण तेरा धाम
मुझको मेरा कौतुहल करवाते दोनों जीव महान
तीर्थंकर गणधर की यह जोड़ी अनंत सिद्धों के समान।
पुलकित है अन्तर्मन मेरा, मैंने देखा ऐसा समोशरण।
गणधरवत् श्री पूज्यश्री ने बतलाया जैनधर्म का मर्म॥

तीर्थंकरवत् कहान...

— श्रीमती बीना जैन, देहरादून

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़

प्रधान सम्पादक
पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, मङ्गलायतन

भूतपूर्व मुख्य सलाहकार
स्व. साहू रमेशचन्द्र जैन, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार
श्री बिजेन्द्रकुमार जैन, अलीगढ़

सम्पादक मण्डल
ब्रह्मचारी पण्डित ब्रजलाल शाह, वढ़वाण
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून

मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
श्री लक्ष्मीचन्द बी. शाह, लन्दन
श्री पवन जैन, अलीगढ़
पण्डित अशोक लुहाड़िया, अलीगढ़

सम्पादकीय सलाहकार
पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन
पण्डित संजय जैन शास्त्री, मङ्गलायतन
पण्डित सुधीर जैन शास्त्री, मङ्गलायतन

शुल्क :
वार्षिक : 50.00 रुपये
एक प्रति : 04.00 रुपये

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन स्मृति अङ्क

क्या / कहाँ

अध्यात्म गगन का....	**3**
जन्म, मृत्यु सहित है	**5**
पण्डितजी का भावनात्मक....	**11**
पिता का पत्र,....	**15**
एक पृष्ठ : पण्डितजी.....	**19**
समाचार दर्शन	**20**
आभाराभिव्यक्ति	**32**

अङ्क के प्रकाशन में सहयोग

श्रीमती मंगलाबेन नानालाल पारेख

ए-7, विवेकानन्द पार्क-3, डॉ. अम्बेडकर रोड, नेहरू मेमोरियल हॉल के सामने

पूना - 411001

पं. सं. : DELBIL/2001/4685
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पवन जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित।
सम्पादक : पण्डित कैलाशचन्द जैन, अलीगढ़।

सम्पादकीय

अध्यात्म गगन का चमकता सितारा अस्त

अध्यात्म मनीषी पण्डित कैलाशचन्द्र जैन का चिर वियोग

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त, पण्डित कैलाशचन्द्र जैन का जन्म, आज से लगभग 99 वर्ष पूर्व ग्राम टीकरी, जिला मेरठ में पिता मिट्ठनलाल जैन के घर, माता श्रीमती भरतोदेवी की कूख से हुआ था। आपके अतिरिक्त दो भाई तथा दो बहनों सहित आप पाँच भाई-बहिन थे।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मथुरा-चौरासी एवं तत्पश्चात् जम्बू विद्यालय, सहारनपुर में हुई। प्रारम्भ से ही स्वाभिमानी वृत्ति के धनी होने के साथ ही निर्भीकता, निस्पृहता, सिद्धान्तों पर अडिगता आदि आपके व्यक्तित्व की उल्लेखनीय विशेषता है।

लघुवय में ही लाहौर में स्वतन्त्र व्यवसाय एवं स्वाधीनता आन्दोलन के पश्चात् स्वदेश वापसी के उपरान्त बुलन्दशहर में आजाद ट्रेडिंग कम्पनी नाम से स्टेशनरी का व्यवसाय करते हुए, अपनी सहधर्मिणी श्रीमती विमलादेवी एवं चार पुत्रियाँ तथा एक पुत्र के साथ सम्पूर्ण पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी धर्ममार्ग पर निरन्तर गतिशील रहे।

आपके जीवन की धारा में आमूलचूल परिवर्तन तब आया, जब गिरनारयात्रा के दौरान सोनगढ़ की दिव्यविभूति पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का साक्षात्कार हुआ। तत्पश्चात् निरन्तर तत्त्वाराधना एवं तत्त्वप्रचार ही आपके जीवन के अंग बन गये और सम्पूर्ण देश में तत्त्वज्ञान की पताका फहराने एकाकी निकल पड़े।

युवावय में ही आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा धारण कर, एकमात्र आत्मसाधना को ही जीवन का उद्देश्य बनाकर उसमें सफलता अर्जित की।

अपने जीवनाधार पूज्य गुरुदेवश्री एवं माननीय श्री रामजीभाई दोशी तथा श्री खेमचन्दभाई सेठ से जो कुछ सीखा, उसी का साकाररूप है 'जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला' के सात भाग; जिनका अनवरत प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षुमण्डल, देहरादून से होता रहा है। इन्हीं ग्रन्थों के आधार

पर आपकी प्रेरणा से आपके सुपुत्र श्री पवन जैन ने 'जिनागमसार' की रचना / संकलन कर, आपकी परम्परा में अभिवृद्धि की है।

विश्व के प्राणीमात्र के प्रति करुणा से ओतप्रोत आपके हृदय की पावन भावनाओं का साकाररूप 'तीर्थधाम मङ्गलायतन', आज जिनेन्द्रदेशना एवं गुरुवाणी के प्रचार-प्रसार की दशा में उल्लेखनीय गति से कार्य कर रहा है। यहाँ से प्रकाशित मासिक 'मङ्गलायतन' पत्रिका, 'मङ्गलायतन-टाइम्स' एवं अनेक साहित्य भी पण्डितजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद का सुफल हैं।

सम्पूर्ण जीवन में की गयी आत्मसाधना के फलस्वरूप आपने अत्यन्त जागृतिपूर्वक एवं शान्तभावों से देह-परिवर्तन किया जो इस बात का परिचायक है कि जीवन में की गयी तत्त्वज्ञान की अनवरत उपासना कभी भी निष्फल नहीं जाती है।

अपने जन्म-नगर बिजौलियाँ में पूज्य पण्डितजी के माध्यम से मुझे तत्त्वज्ञान अर्जित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, यह मेरा परम सौभाग्य है। अपने जीवन में पूज्य गुरुदेवश्री के साक्षात् दर्शनों के सौभाग्य से वंचित रहने पर भी, पण्डितजी के माध्यम से गुरुदेवश्री के द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान के प्रति गहन निष्ठाभाव मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है, जो मुझे पण्डितजी के माध्यम से प्राप्त हुई है।

मैं अपने को गौरवशाली मानता हूँ कि पूज्य पण्डितजी मेरे गुरु हैं और मैं पूज्य पण्डितजी का शिष्य।

पण्डितजी के प्रेरक व्यक्तित्व से सीख लेते हुए हम सबको तत्त्वज्ञान की साधना-आराधना करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली है।

वर्तमान में आदरणीय पण्डितजी की सदेह अनुपस्थिति में भी उनके द्वारा दर्शाये गये तत्त्वज्ञान एवं जैन-सिद्धान्तों के सूत्र, हमारे आत्मकल्याण में निमित्त होकर हमें अनन्त काल तक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। अन्त में आपश्री के सादि-अनन्त मङ्गल अभ्युदय की भावना भाते हुए विनम्र श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ।

जन्म, मृत्यु सहित है

इस असार संसार में जन्म, मृत्यु के साथ ही है। जिसने शरीर के संयोगरूप जन्म धारण किया है, उसे शरीर के वियोगरूप मरण अवश्यंभावी है। इस तथ्य का उद्‌घाटन, स्वामी कार्तिकेय ने कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रन्थ में किया है। आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के चिरवियोग के अवसर पर कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रन्थ की गाथा 5-6 पर हुए पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वैराग्यरस भरपूर प्रवचन यहाँ दिये जा रहे हैं।

जम्मं मरणेण समं, संपज्जइ जोव्वणं जरासहियं।
लच्छी विणास सहिया, इयं सव्वं भंगुरं मुणह॥

अथिरं परिणय-सयणं, पुत्त-कलत्तं सुमित्त-लावण्णं।
गिह-गोहणाइ सव्वं, णव-घण-विंदेण सारिच्छं॥

अर्थात् यह जन्म है, सो मरणसहित है; यौवन है, सो जरासहित उत्पन्न होता है; लक्ष्मी है, सो विनाशसहित उत्पन्न होती है; इस प्रकार सब वस्तुओं को क्षणभङ्गुर जानो।

परिवार, बन्धुवर्ग, पुत्र, स्त्री, अच्छे मित्र, शरीर की सुन्दरता, गृह, गोधन इत्यादि समस्त वस्तुएँ नवीन मेघ के समूह के समान अस्थिर हैं।

अब, अध्रुवभावना के वर्णन में शरीरादि का अनित्यपना बतलाते हैं।

हे भव्य! भावना तो ज्ञानानन्द नित्यस्वभाव की करना है। अनित्यभावना का यह अर्थ नहीं है कि अपने को अनित्यरूप भाना। 'मैं तो नित्य ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ' — ऐसी भावनापूर्वक, पर के प्रति वैराग्य होता है; इसलिए 'यह शरीरादि अनित्य हैं' — ऐसी अनित्यभावना भाते हैं। इससे धर्मी को पर के प्रति एकत्वबुद्धि से हर्ष-शोक नहीं होते।

जगत् में जितनी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, वे सब प्रतिपक्षसहित हैं, अर्थात् जिसका जन्म हुआ है, उसका नाश होता ही है। जिसका संयोग हुआ

है, उसका वियोग हो जाता है — ऐसा जानने से संयोग-वियोग के कारण हर्ष-शोक नहीं होता। जब से बालक का जन्म हुआ, तब से ही वह मरण को साथ लाया है।

स्वर्ग में जन्म होने पर 'मैं उत्पन्न हुआ' — ऐसा मानकर, पर्यायबुद्धि से हर्ष करना मिथ्यादृष्टि का हर्ष है। देह का वियोग होने पर भी ज्ञानी का नित्यस्वभाव की ही भावना होने से उसको पर्यायबुद्धिपूर्वक शोक नहीं होता।

सम्यग्दृष्टि को तो अखण्ड द्रव्य की ही रुचि और भावना है। वह नित्यस्वरूप के आश्रयपूर्वक ऐसी अनित्यभावना भाता है कि यह जन्म तो क्षणिक है। जन्म हुआ, वह मरणसहित है और पर्याय में क्षणिक राग-द्वेष होते हैं, वह मेरा नित्यस्वरूप नहीं है; वे तो क्षणिक हैं। वे राग-द्वेष पर के कारण भी नहीं हुए हैं और मेरे स्वभाव से भी नहीं हुए हैं। वे क्षणिक पर्याय हैं — ऐसा जानता हुआ धर्मी, उस विकार की भावना नहीं करता है।

जन्म हो, वहाँ अज्ञानी उसे ही स्थिर जानकर हर्ष करता है। स्थिर तो अपना आत्मद्रव्य है, उसका जिसको भान नहीं है — ऐसा अज्ञानी जीव, पर्याय में ही स्थिरता की बुद्धि करके राग करता है। पुत्र का जन्म हो, वहाँ ज्ञानी उस पुत्र के जन्म के कारण राग होना नहीं मानता। राग होना तो चारित्रगुण की विपरीत पर्याय है। धर्मी उसका जाननेवाला रहता है। राग के समय भी राग के अभावरूप ज्ञान का परिणमन है। तात्पर्य यह है कि धर्मी को राग के साथ एकत्वबुद्धि से राग नहीं होता।

'अहो! यह देह का संयोग अनित्य है' — धर्मी ऐसा चिन्तवन करता है, उसमें विकल्प की मुख्यता नहीं है क्योंकि धर्मी को पर्यायबुद्धिपूर्वक राग नहीं होता। जिसको पर्यायबुद्धि है, वह पर्याय को नित्य रखना चाहता है, वह मिथ्याबुद्धि है। धर्मी जीव तो नित्यस्वभाव की दृष्टि साथ रखकर, पर्यायों को अनित्यरूप भाता है; इसलिए नित्यस्वभाव की भावना के बल से प्रतिक्षण वीतरागता बढ़ती जाती है — इसी का नाम वास्तविक भावना है। धर्मी ने ज्ञानस्वभाव को जाना है, उसे उसकी ही मुख्य भावना है।

देखो भाई! धर्मी को पर संयोग की भावना तो नहीं है और वस्तुतः ज्ञानी

पर को देखता भी नहीं है, अपितु ज्ञान के स्व-परप्रकाशक परिणमन में परज्ञेयों का ज्ञान हो जाता है परन्तु धर्मी की दृष्टि में तो अखण्ड ज्ञानस्वभाव की ही मुख्यता है। पूर्व की पर्याय को भी वह मुख्यरूप से नहीं देखता।

आत्मा को केवलज्ञान होने पर उसमें लोकालोक एक साथ ज्ञात होते हैं और उस ज्ञान में सदा लोकालोक ज्ञात हुआ ही करते हैं अर्थात् वहाँ लोकालोक का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध एक समान रहा करता है। यहाँ केवलज्ञान की एकरूप धारा है, उसको लोकालोक सदा ज्ञेयरूप रहा करता है परन्तु छद्मस्थ की ज्ञानपर्याय प्रतिक्षण अन्य-अन्य ज्ञेयों को जाननेरूप पलट जाती है। नयी-नयी पर्याय पलटती है, वह पर्याय उस-उस काल के ज्ञान को और उस-उस काल के ज्ञेय को जानती है; इसलिए उस ज्ञान और ज्ञेय का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध एक समान नहीं रहता। स्वभाव के आश्रय से प्रगट होनेवाला पूर्ण केवलज्ञान सदा ऐसा का ऐसा टिका रहता है। निचलीदशा में प्रगट होनेवाली ज्ञानपर्याय भी स्वयं से ही है। वह ज्ञान, ज्ञान के कारण और पर की पर्याय पर के कारण है — ऐसा भान होने से धर्मी को पर्याय के परिवर्तन में हर्ष-शोक नहीं होता किन्तु स्वभाव की भावना करने से एकाग्रता और संवर बढ़ते जाते हैं। अज्ञानी को पर संयोग से कारण हर्ष-शोक की मान्यता के कारण आस्रव बढ़ता जाता है।

जन्म होने पर उसे स्थिर मानकर, अज्ञानी हर्ष करता है परन्तु वह अनित्यता को नहीं जानता है और मरण होने पर सर्वथा अपना नाश मानकर, अज्ञानी शोक करता है परन्तु भाई! पर्याय पलटने का तो जगत का स्वभाव है। जगत् में से किसी जीव या अजीव वस्तु का नाश नहीं हो जाता। वस्तु कभी उपजती या नष्ट नहीं होती है परन्तु उसकी पर्याय उपजती और विनष्ट होते देखकर, अज्ञानी जीव, वस्तु की ही उत्पत्ति और विनाश मानकर हर्ष-शोक करता है। वह पर्याय के अनित्य स्वभाव को नहीं जानता, इस कारण उसको मिथ्यात्वसहित हर्ष-शोक होते हैं।

इष्ट पदार्थ का संयोग होना अथवा वियोग होना तथा अनिष्ट पदार्थ का संयोग होना अथवा वियोग होना तो परपदार्थ की पर्याय का धर्म है।

उसका संयोग-वियोग इस जीव के कारण नहीं होता। धर्मी तो जानता है कि परवस्तु का संयोग-वियोग मेरे आधीन नहीं है और न उस परवस्तु के संयोग-वियोग के कारण मुझे हर्ष-शोक ही होते हैं। संयोग और वियोग — ये दोनों तो क्षणिक पर्याय का धर्म है, मैं तो असंयोगी चैतन्यतत्त्व हूँ - धर्मी जीव ऐसे नित्यस्वभाव को भावनापूर्वक संयोगों की अनित्यता की भावना भाता है।

अज्ञानी को ध्रुव ज्ञानस्वभाव की भावना नहीं है, इसलिए वह क्षणिक संयोग-वियोग में ही हर्ष-शोक करता है। जगत के पदार्थ तो उनके पर्यायधर्मानुसार बदला ही करते हैं, वहाँ 'यह संयोग मुझे इष्ट है और यह संयोग अनिष्ट हैं' — ऐसा मानकर, अज्ञानी उनकी पर्याय में हर्ष-शोक करता है।

बन्दूक की गोली आने पर 'हाय-हाय' करके अज्ञानी शोक करता है और गोली से बच जाने पर उत्साह से हर्ष करता है। उसने संयोग-वियोग में ही सर्वस्व मान लिया है परन्तु उसको यह भान नहीं है कि मेरे चैतन्यस्वभाव में पर का संयोग-वियोग है ही नहीं। अत: उसे संयोग में एकत्वबुद्धि से हर्ष-शोक होते हैं।

इसलिए नित्य ज्ञानानन्द स्वभाव को जानकर, संयोग-वियोग अनित्य है — ऐसी भावना भाकर समतारूप रहना योग्य है।

अब, दृष्टान्तपूर्वक अनित्यता को समझाते हैं।

जैसे, आकाश में बादल आकर बिखर जाते हैं, वैसे ही जगत में स्त्री-पुत्रादि का संयोग आता है, वह क्षण में चला जाता है। वस्तुत: तो स्त्री-पुत्रादि की पर्याय एक-एक समय में पलट जाती है। ज्ञानी तो उनकी पर्याय को एक-एक समय में पलटती जानता है, इस कारण उसको उनमें सुखबुद्धि नहीं होती। जो कोई स्त्री-पुत्रादि का परिवार है, वह प्रत्येक समय में पलट रहा है। पुत्र का जन्म हुआ, उसी समय से प्रत्येक समय वह मरण के सन्मुख (निकट) होता जाता है।

माता कहती है, 'लड़का बड़ा होता है' तो ज्ञानी कहते हैं कि उसकी

आयु प्रत्येक समय कम हो रही है अर्थात् वह मरण के सन्मुख होता जा रहा है। 'पचास वर्ष की आयु' कहना तो स्थूल ऋतुसूत्रनय का कथन है परन्तु वह स्थूल ऋजुसूत्रनय कब कहलाता है ? यदि उसी समय सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय का भी भान हो कि प्रत्येक समय उसकी पर्याय का विनाश हो रहा है।

अज्ञानी को यथार्थ अनित्यभावना नहीं होती। वह तो पर्याय को नित्य रखना चाहता है। यदि वास्तव में पदार्थ के पर्यायधर्म को जाने तो उसका आश्रय छोड़कर, ध्रुव स्वद्रव्य के सन्मुख हुए बिना न रहे। जो जीव अनुकूल पुत्र-मित्र आदि पर्याय को देखकर, उस क्षणिक पर्याय को ही स्थिर मानता है, उस जीव ने पर्याय को ही सर्वस्व मानकर अखण्ड द्रव्य को उड़ा दिया है।

अभी सुन्दर शरीर हो और भविष्य में दुर्गन्धित कुत्ता होना हो, वहाँ अज्ञानी तो वर्तमान सुन्दर देह को देखकर, उसे ही नित्य मानकर राग करता है परन्तु यहाँ तो कहते हैं कि पर्याय को अनित्य जानकर, तू निज ध्रुव ज्ञानानन्दस्वभाव की भावना कर! धर्मी को ध्रुवस्वभाव की दृष्टिपूर्वक ये अनित्य आदि भावना भाते हुए पर्याय में प्रतिक्षण आनन्द बढ़ता जाता है; इसलिए इन बारह भावनाओं को 'भव्यजन आनन्द जननी' कहा गया है।

पदार्थ आते हैं, वे स्वयं के पर्यायधर्म से आते हैं, वहाँ मेरे कारण वह पदार्थ आये —ऐसा मानकर मूढ़ जीव राग करता है परन्तु पदार्थ तो उनके पर्यायधर्म से आते हैं। उनके पर्यायधर्म में फेरफार करना माननेवाला मिथ्यादृष्टि है।

वस्तु में 'द्रव्यधर्म' और 'पर्यायधर्म' — ऐसे दोनों प्रकार का धर्म हैं। वस्तु पर्यायधर्म से प्रतिसमय पलटती है और द्रव्यधर्म से त्रिकाल शाश्वत् रहती है। पदार्थ का पर्यायस्वभाव ही प्रतिक्षण पलटने का है। मैं उसे मिलाऊँ या हटाऊँ — ऐसी मान्यतावाले ने पर्याय को अनित्य नहीं जाना अर्थात् वस्तु के पर्यायधर्म को नहीं जाना।

अहो! पदार्थ की पर्याय प्रतिक्षण पलटा करती है — ऐसा ही उसका स्वभाव है। उसमें हर्ष-शोक क्या ? वस्तु द्रव्यरूप से ध्रुव है — ऐसा

जानकर, नित्य वस्तु की भावना करके, पर्यायधर्म को जैसा हो, वैसा जानने में अकेली वीतरागता ही होती है। यह बात तो जिसे वीतरागता चाहिए, उसके लिए है। जहाँ पदार्थों को पर्याय से अनित्य जाना, वहाँ पर्याय के कारण हर्ष-शोक मानकर होनेवाले हर्ष-शोक का अभाव हो गया और स्वभाव सन्मुख झुका। स्वभाव के कारण हर्ष-शोक नहीं होते, इसलिए अकेला ज्ञातापना और वीतरागभाव ही होता है।

पुत्र, मकान, लक्ष्मी इत्यादि पदार्थों को देखकर, अज्ञानी मानता है कि 'मुझे ये मिले' — इस प्रकार उन्हें स्थिर मानकर, मोहपूर्वक उससे राग करता है परन्तु वे सब तो अस्थिर हैं; नित्य तो ध्रुवद्रव्य है। ध्रुवद्रव्य और अध्रुवपर्याय — इन दोनों के मेल बिना परवस्तु की पर्याय में हर्ष-शोक की बुद्धि का अभाव नहीं होता। जगत के समस्त पदार्थों की पर्याय उसके स्वभाव से ही अस्थिर है। द्रव्य कभी भी अपनी पर्याय बिना नहीं होता और पर्याय कभी स्थिर नहीं रहती — ऐसे भानवाले धर्मी को ही यथार्थ अनित्यभावना होती है। जिसको नित्य ज्ञानानन्दस्वभाव की रुचि और दृष्टि हुई हो, उस जीव को ही यह अनित्यभावना यथार्थ होती है — ऐसा सिद्धान्त है। उसको इस भावना से शुद्धि की वृद्धि होती है।

यह भावना तो शुद्धि की वृद्धि के लिए है, इसलिए इस भावना को आनन्द की जननी कहा है। तीर्थङ्कर भगवन्त भी पुरुषार्थपूर्वक यह वैराग्य भावना भाते हैं।

स्त्री-पुत्रादि सर्व पदार्थों का संयोग क्षणिक है। मेरा असंयोगीस्वभाव ध्रुव है — ऐसे स्वभाव के भानपूर्वक, क्षणिक संयोग-वियोग को अस्थिर जाकर, उसमें हर्ष-शोक नहीं करना। ध्रुवस्वभाव का आश्रय करने से अस्थिर संयोगों में हर्ष-शोक का अभाव हो जाता है। क्रमबद्धपर्याय की प्रतीति होने से वस्तुस्वभाव की रुचि होकर, राग मन्द (हीन) पड़ता जाता है और वीतरागता बढ़ती जाती है; इसलिए क्रमबद्धपर्याय की प्रतीति (ज्ञान) में भी ऐसी भावनाएँ आ ही जाती हैं। ●●

पण्डितजी का भावनात्मक पत्र :

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

सोनगढ़, दिनाँक 7-1-1969

हे पूज्य गुरुदेव!

वर्तमान में धर्म का विरह हो रहा था, आपने उस का पात्र जीवों को साक्षात् कराया; इसलिए पात्र जीव आपको नतमस्तक होता है।

नत-मस्तक आपको वही हुआ कहला सकता है, जिसने भावश्रुतज्ञान में अपने आपको अनुभव कर लिया हो। जिसको अपनी आत्मा का अनुभव नहीं, वह आपको नमस्कार के लायक नहीं है। वास्तव में तो ज्ञानी अपने आपको ही नतमस्तक होता है; ज्ञानी को अपने स्वभाव का निर्विकल्प अनुभव हुआ है, उसी में रहना चाहता है। न रहा जाने पर यह भगवान, गुरुदेव आदि समस्त तीर्थङ्करादि देव-गुरु-शास्त्र, इस प्रकार पूर्णता को प्राप्त हुए हैं, मैं भी अपने स्वभाव में परिपूर्ण होऊँ —ऐसा विकल्प ज्ञानी को हेयबुद्धि से आता है, क्योंकि वह तो अपने स्वरूप में ही रहने का कामी है। सविकल्पदशा में ऐसा विकल्प, वह गुरुदेव का व्यवहार से बहुमान है। उस विकल्प को मिटाकर, अर्थात् अपना परिपूर्ण आश्रय करता है, वह तमाम देव-गुरु-शास्त्र का आदर है। हे पूज्यश्री! वर्तमान में मेरे विचार में आप ना होते तो आज जैनधर्म का लोप हो गया होता —ऐसा कहने में आता है।

प्रश्न - जैनधर्म क्या है?

उत्तर - अपने त्रिकाली ज्ञायकस्वभाव भगवान आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान-स्थिरता ही जैनधर्म है। जब तक अपना अनुभव ना हो, तब तक जैनधर्मी नहीं है; विधर्मी हैं। द्रव्यलिङ्गी मुनि, जिसको शुक्ललेश्या तक हो जाती है, वह जैनधर्मी नहीं है; विधर्मी है। — ऐसा कुन्दकुन्द भगवान ने श्रीप्रवचनसार, गाथा 271 में कहा है। अनादि से अज्ञानियों ने मन्त्र जपना, मन्दिर में जाना, हाथ आदि क्रिया, शब्द उच्चारण, सामग्री चढ़ाना दान, दया आदि विकल्पों को जैनधर्म माना है। भगवान कहते हैं — जो पर से, शुभभाव से स्वप्न में भी जैनधर्म मानता है, वह जैनशासन का शत्रु है,

क्योंकि जैनधर्म शुद्धभाव है; शुभाशुभभाव नहीं।

अहो! निगोद में भी जीव अकेला, द्विइन्द्रिय से लेकर द्रव्यलिङ्गी मुनि मिथ्यात्व अवस्था में भी जीव अकेला ही है। विचारो! मिथ्यात्व अवस्था में जीव, कर्ता-कर्म-करण, कर्मफल स्वयं ही है; कोई कर्म, शरीर, स्त्री, पुत्रादि नहीं है। और शुद्धदशा प्रगट करने स्थिरता करने, अर्थात् चौथे गुणस्थान, पाँचवें गुणस्थान, सातवें गुणस्थान - श्रेणी में अरहन्त अवस्था, सिद्ध अवस्था में भी कर्ता, कर्म, करण, कर्मफल, आत्मा ही है; अन्य जरा भी नहीं — ऐसा जाननेवाला क्या विकाररूप परिणमेगा? कभी नहीं। क्योंकि वह तो अपने भगवान आत्मा का कामी है। उसी में स्थिरता, वृद्धि, पूर्णता करता है और लीन होता हुआ क्रम से परिपूर्णता करके, मोक्षरूपी लक्ष्मी का नाथ बन जाता है।

प्रश्न - क्या द्रव्यलिङ्गी मुनि, संसार अवस्था में तथा ज्ञानी, संसाररहित अवस्था में, जीव अकेला ही है — ऐसा नहीं जानता?

उत्तर - वास्तव में जब तक अपना अनुभव नहीं होता है, तब तक यह बात जीव के हृदय में नहीं बैठ सकती है। अनुभव हुए बिना यह बात कहेगा, लेकिन उसका कहना तोते के समान है; इसलिए सबसे प्रथम अनुभव करना, सम्यग्दर्शन प्राप्त करना, पात्र जीव का परम कर्तव्य है।

प्रश्न - वर्तमान में सम्यग्दर्शन प्राप्त होना मुश्किल है?

उत्तर - ऐसा कहने का विचार अनन्त तीर्थङ्करों, गुरु, शास्त्र की विराधना है तथा अपनी आत्मा की विराधना करनेवाला आत्मघाती महापापी है, क्योंकि वर्तमान में पात्र जीव में इतनी शक्ति व्यक्त है कि वह सातवें गुणस्थान की दशा प्रगट कर सके। वैसे, त्रिकाली शक्ति तो सिद्ध बनने की भी है लेकिन वर्तमान में भगवान की दिव्यध्वनि में आया कि पञ्चम काल में उत्पन्न जीव, सातवें गुणस्थान से ज्यादा पुरुषार्थ नहीं कर सकेगा। इस अपेक्षा बात है। हमारे पास ज्ञान है -या तो उसे परपदार्थों में इष्ट-अनिष्ट मानने में लगा दो या अपने भगवान की ओर। — यह अपनी ओर नहीं लगाता, पर में अपनी बुद्धि लगाता है तो अनन्त संसार का पात्र बनता है; इसलिए, वर्तमान में सच्ची बात प्रगट हुई है — ऐसा जानकर, पात्र जीव को

तुरन्त अपना आश्रय लेकर धर्म की प्राप्ति, वृद्धि का निरन्तर उपाय करना चाहिए। वह उपाय, एकमात्र पर से, विकार से भला माना है; इस बुद्धि को हटाकर, अपने स्वभाव के सन्मुख करे तो विकार उत्पन्न ही नहीं होगा, तब भगवान का भक्त कहलावेगा।

प्रश्न – अपने आत्मा का अनुभव करने के लिए क्या करे तो, अवश्य आत्मा के अनुभव की प्राप्ति हो और क्या करे तो आत्मा के अनुभव की प्राप्ति कभी भी न हो ?

उत्तर – (1) संसार में अनन्त जीव हैं, अनन्तानन्त पुद्गल हैं, धर्म अधर्म आकाश एक-एक है लोकाकाश प्रमाण असंख्यात कालद्रव्य हैं; इनसे मेरा किसी भी प्रकार से सर्वथा सम्बन्ध न है, न था, न होवेगा।

(2) मेरी आत्मा में जो अनादि से शुभाशुभ हैं, यह एक-एक समय करके अनादि के कहलाते हैं; वास्तव में मेरा संसार एक समय का है। वह मात्र मेरी मूर्खता के ही कारण है परवस्तु-द्रव्यकर्म, नोकर्म के कारण बिल्कुल नहीं।

(3) मैं स्वयं अनादि-अनन्त ज्ञायकस्वभावी हूँ और विकार एक समय का है — ऐसा जानकर जो अनादि से दृष्टि पर में जा रही है, उसके बदले अपने त्रिकाली ज्ञायकस्वभाव की ओर करे तो तुरन्त संसार का अभाव हो जाता है और ऐसा ना करे तो संसार का अभाव कभी भी नहीं होगा। मिथ्यात्व ही संसार है।

प्रश्न – मिथ्यात्व क्या है ?

उत्तर – परवस्तुओं में तथा शुभाशुभभावों में अपनत्वपने की बुद्धि, मिथ्यात्व है। मोह-राग-द्वेषरहित मेरी आत्मा का स्वभाव है — ऐसा जानकर, अपना आश्रय ले तो तुरन्तं ससार का अभाव हो जाता है, क्योंकि संसार अपनी मूर्खता से आप खड़ा किया है और आप ही स्वयं अपना आश्रय ले तो संसार का अभाव हो।

प्रश्न – द्रव्यलिङ्गी तो बहुत करता है, उसका संसार का अभाव क्यों नहीं हुआ ?

उत्तर – द्रव्यलिङ्गी मुनि ने अपनी आत्मा का आश्रय नहीं लिया; इसलिए उसका संसार का अभाव नहीं हुआ। उसने बल्कि उल्टा यम, नियम, संयमादि

में ही समय को बरवाद किया; उसका फल एक-आध भव ग्रैवेयक का होकर निगोद है। मिथ्यादृष्टि को शुभ का बन्ध उत्कृष्ट 15 कोड़ा-कोड़ी का होता हैं; और त्रस की स्थिति दो हजार सागर से कुछ अधिक होती हैं, इतना लम्बा पुण्य भोगने का स्थान है नहीं। इसलिए उत्कृष्ट पुण्य का बाँधनेवाला, पुण्य को पाप में बदलकर, नियम से निगोद में चला जाता है जिसका दृष्टान्त द्रव्यलिङ्गी मुनि है। द्रव्यलिङ्गी मुनि ने पुण्य को आदरणीय माना है। पुण्य को आदरणीय या पुण्य से धर्म का लाभ होगा - पुण्य करते-करते मोक्ष की प्राप्ति हो जावेगी — ऐसी मान्यतावाला, नामनिक्षेप से भी दिगम्बर नाम नहीं धराता; बल्कि विधर्मी नाम पाता है।

इसलिए पुण्य-पाप रहित मेरी आत्मा का स्वभाव है — ऐसा जानकर, अपने स्वभाव के आश्रय से धर्म की प्राप्ति करे तो जीव, संसार का अभाव करके मोक्षरूपी लक्ष्मी का नाथ बनें। छः द्रव्य, सात तत्त्व, नौ पदार्थों में एकमात्र अपनी आत्मा ही परम आदरणीय है, उसी के आश्रय से धर्म की शुरुआत, वृद्धि और पूर्णता होती है।

कैलाशचन्द्र जैन

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

इस वर्ष कक्षा 6, 7 एवं 8 में प्रवेश

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं बहिनश्री चम्पाबेन की साधनास्थली सोनगढ़ में विगत तीन वर्षों से संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थीगृह में इस वर्ष कक्षा 6, 7 एवं 8 में अंग्रेजी तथा गुजराती माध्यम में प्रवेश दिया जा रहा है। छात्रों को आवास, भोजन एवं शिक्षा की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क है। जो भी छात्र यहाँ रहकर अध्ययन करना चाहें वे हमारे कार्यालय से आवेदन-पत्र मँगाकर **20 मार्च 2013** तक अपेक्षित प्रपत्रों सहित भेज दें। पूर्व कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त प्रवेश योग्य छात्रों को **16 से 20 अप्रेल 2013** के प्रवेश पात्रता शिविर में बुलाया जायेगा। आवेदन-पत्र हमारी वेवसाइट www.vitragvani.com पर भी उपलब्ध रहेंगे।

सम्पर्कसूत्र : **प्राचार्य, श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थीगृह**
राजकोट-भावनगर हाईवे रोड, सोनगढ़-364250, जिला-भावनगर (सौराष्ट्र)
फोन : 02846-244510, 09624807462

पिता का पत्र, पुत्र के नाम

आत्मार्थी विद्वान् पण्डित कैलाशचन्द्र जैन द्वारा अपने पुत्र श्री पवन जैन को लिखा गया एक पत्र यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे इस बात का परिज्ञान होता है कि पण्डितजी की दृष्टि में लौकिक रिश्तों की अपेक्षा धर्म ही सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है।

सावली, 17-12-1972

आत्मार्थी बन्धु पवनजी,

धर्म की प्राप्ति हो!

(1) प्रत्येक जीव सुख के लिये निरन्तर प्रयत्न कर रहा है परन्तु उसे यह पता नहीं है कि दु:ख क्या है ? और सुख क्या है ? विचारो! बगैर सोचे समझे, परवस्तुओं में, पाँच इन्द्रियों के विषयों में सुख की कल्पना करके, जैसे हिरन खुशबू के लिए जंगल में दौड़ता; उसी प्रकार अज्ञानी जीव, सुख के लिए चारों तरफ दौड़ रहा है परन्तु सुख की प्राप्ति जरा भी नहीं हुई। कारण कि सुख तो अपने स्वभाव का आश्रय ले तो प्रकट हो, परन्तु यह उसकी (सच्चे सुख की) परवाह न करके, पाँचों इन्द्रियों के विषयों में तथा जिनसे सुख होना मानता है, उन्हें इकट्ठा करने में तथा जिनसे दु:ख होना मानता है, उन्हें हटाने में ही अपना मनुष्य-जीवन समाप्त कर देता है और दूसरी गति में चला जाता है, फिर जहाँ पहुँचता है, वहाँ भी इसी प्रकार मानता हुआ, यह अज्ञानी जीव चारों गतियों में घूमकर कितनी ही बार निगोद हो आया। इसीलिए 'हे मुमुक्षु भाई! तुझे मनुष्य जन्म मिला है, सच्चे देव, गुरु, शास्त्र का निमित्त हुआ है तथा हमें भी अपनी मूर्खतावश आपको सम्बोधने का विकल्प आया है, (यद्यपि यह विकल्प हमारे लिये हानिकारक है) और यदि इतना अवसर आने पर भी यह जीव नहीं चेतता तो ज्ञानियों को तो उनकी होनहार ही विचार में आने पर समता आती है।

(2) धर्म का साधारण ज्ञान (छहढाला व जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

आदि पढ़ने पर भी) होने पर भी हे भाई! तुम्हें अपनी ओर सन्मुख होने का विचार नहीं आता, बड़ा आश्चर्य है। तुम्हारी आत्मा भगवान है। उसका वर्णन नहीं हो सकता। तुम उसको भूल रहे हो, जरा दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखो, तुरन्त शान्ति मिलेगी।

(3) आकुलता दु:ख है और आकुलता का अभाव होना ही सुख है। इस आकुलता के अभाव के लिये दो बातें हैं –

(1) अपने रागादिक दूर हों।

(2) या आप चाहें उसी प्रकार सब द्रव्य परिणमित हों।

इनमें से कोई एक बात हो जाये तो आकुलता मिटे। अब विचारो– आपकी इच्छानुसार तो सर्व द्रव्य (पदार्थ) परिणमन नहीं कर सकते क्योंकि किसी भी द्रव्य का परिणमन, किसी के अधीन नहीं है। इसलिए अपनी ओर दृष्टि करने से रागादिक दूर होकर धर्म की प्राप्ति होती है और आकुलता की समाप्ति, धर्म की प्राप्ति का ही दूसरा नाम है और यह कार्य हो सकता है, क्योंकि आप स्वयं आत्मा हैं–भगवान हैं।

(4) अब प्रश्न आता है कि यह कार्य कैसे हो?

सो हे भाई!

(1) पर से तो किसी भी प्रकार का, चाहें वह तीर्थंकर हों, कोई सम्बन्ध नहीं है, यह निर्णय कर।

(2) पर्याय में जो राग–द्वेष होता है, वह एक समय का है, वह अपना ही अपराध है; किसी पर ने नहीं कराया – ऐसा निर्णय करके अपने भगवान आत्मा की ओर दृष्टि करते ही यह कार्य हो जाता है। यह सहज है–आसान है लेकिन जो कार्य आप करते हैं, वह तो पुण्य के योग से ही तो होता है। उसमें तुम्हारी जरा भी होशियारी नहीं परन्तु अपनी ओर दृष्टि करके शान्ति प्राप्त करना, इसमें अपनी होशियारी है। सावधान! सावधान!! यह अवसर चला गया तो फिर पछताना पड़ेगा।

(5) धन आदि कमाने का जो भी कार्य आप करते हैं, उसकी कोई

सीमा है, कि कितना धन हो जावे तो सुख हो? जरा विचारो, यदि तुम भगवान को केवलज्ञानी मानते हो तो जो उनके ज्ञान में आया है, वही होगा या नहीं; उसमें जरा भी हेरफेर नहीं होगा - ऐसा स्वतन्त्र सम्बन्ध है।

'जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे।
अनहोनी कबहु ना होत, काहे होत अधीरा रे॥'

यदि इतना माने तो कर्ता-भोक्ता की बुद्धि का अभाव होकर, धर्म की प्राप्ति हो।

(6) विश्व में छह जाति के द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य में अनन्त-अनन्त गुण हैं। प्रत्येक गुण अनादि-अनन्त है। प्रत्येक गुण अनादि-अनन्त कायम रहता है। उसमें एक पर्याय का अभाव और एक की उत्पत्ति - ऐसा निरन्तर होता है, होता रहा है और होता रहेगा - ऐसी परमेश्वरी व्यवस्था है। मोक्षमार्गप्रकाशक में भी आया है - 'अनादि निधन वस्तुएँ जुदी-जुदी (अलग-अलग) अपनी-अपनी मर्यादा लिये परिणमे हैं। कोई किसी का परिणामाया परिणमता नाहिं।' यह वस्तु स्वभाव है, इसको मानते ही सारे दु:ख का अभाव हो जाता है। *(कृपया पढ़े - मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 52)*

(7) अपनी पात्रता के बिना भगवान भी किसी को नहीं सुधार सकते, फिर हम क्या सुधार सकते हैं? आपको पत्र लिखने का विकल्प आया है। हम जानते हैं कि हम किसी को बिगाड़-सुधार नहीं सकते - फिर भी अपनी मूर्खतावश ऐसा भाव आया है। तुम समझो! समझो!!

(8) वर्तमान में एक सत्य वक्ता मेरे विचार से जहाँ तक मैं जानता हूँ, एकमात्र पूज्य श्री कानजीस्वामी हैं। आज पूज्यश्री न होते तो पात्र जीवों का क्या होता?

(9) हे भाई! चाहे आज करो, चाहे कल करो, चाहे हजार वर्ष बाद करो; जब भी धर्म की प्राप्ति होगी, एकमात्र अपने आश्रय से ही होगी; पर से या विकल्पों से नहीं - ऐसा जैनागम का सार है। समयसार, गाथा 11 में भूतार्थ आश्रित धर्म की प्राप्ति, यह चारों अनुयोगों का सार है।

(10) 'अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही॥'

इसलिए इच्छारहित अपने स्वभाव का आश्रय लो तो शान्ति होवे। संसार में चारों तरफ ठग हैं। सच्चा स्वरूप समझानेवाला कोई न मिलेगा।

(11) लौकिकरूप से सात व्यसन व पाँच पापों से लौकिक सज्जन को दूर रहना चाहिए। संसार में कोई किसी का साथी नहीं है, किसी को साथी मानना मिथ्यात्व है।

(12) अन्त में अब क्या करना चाहिए?

उत्तर - जैसे गाय खाने के बाद जुगाली करती है, उसी प्रकार छहढाला आदि का अध्ययन करके उनका मनन करो।

'चेतन को है उपयोगरूप, चिन मूरत बिन मूरत अनूप।
पुद्गल नभ धर्म-अधर्म काल, इतने न्यारी है जीव चाल॥'

इसमें विचारो कि मेरा कार्य ज्ञाता-दृष्टा है। आँख, कान, शरीर मेरे नहीं, मैं चैतन्यस्वरूप हूँ; शरीरस्वरूप नहीं हूँ। आज तक रुपया, पैसा, स्त्री, पुरुष आदि को अनुपम माना, परन्तु शास्त्रकार कहते हैं कि तू अनुपम है। तेरा पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल से कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु अज्ञानी जीव को इनसे अपना सम्बन्ध लगता है। इसलिए शास्त्र की बात प्रमुख करके, वह अपनी मान्यता को गौण करके विचार करोगे तो शान्ति मिलेगी। छहढाला की दूसरी ढाल का सूक्ष्म अध्ययन करके, उस पर विशेष विचार करो। इससे अपनी गलती का पता चलेगा और क्या करने से शान्ति प्राप्त होगी? - इस बात का पता चलेगा। अपनी बुद्धि को अपनी ओर लगा दो, कल्याण होगा।

कैलाशचन्द्र जैन

स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन द्वारा लिखित अनेक पत्रों का 'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ में संकलन किया गया है; उन्हीं पत्रों का 'मङ्गल पत्रांजलि' नामक लघु ग्रन्थ भी अब उपलब्ध है।

एक पृष्ठ : पण्डितजी की डायरी का

दिनाँक 20-1-94

(1) मृत्यु तो एक बार होनी ही है; इसलिये देह का लक्ष्य छोड़कर, अमृतस्वरूप निज आत्मा पर दृष्टि कर।

(2) भाई! शरीर तुम्हारा कहा नहीं मानता तो शरीर के प्रति प्रेम क्यों करते हो?

(3) शरीर, अचेतन-पुद्गलों का पिण्ड है; मैं इसका कर्ता या आधार नहीं, मुझे इसका पक्षपात नहीं; इसका जैसा होना होवे, होओ — मैं तो अपने में मध्यस्थ हूँ।

(4) मरण समय जिन्दगी के अभ्यास का नमूना आता है। यदि उस समय भेदज्ञानपूर्वक-आत्मा की भावनापूर्वक, शान्ति से देह छोड़े तो होशियारपना है।

(5) शरीर में कैसा भी हो, उसके ऊपर दृष्टि न देकर, निज ज्ञानानन्द-स्वरूप का लक्ष्य करना। भेदज्ञान की भावना रखना, स्वसत्तावालम्बी उपयोग आत्मा का स्वरूप है — उसका विचार कर (1) मैं तो ज्ञायक हूँ — ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी व्रजपात होने पर भी डिगता नहीं और निज स्वरूप की श्रद्धा छोड़ता नहीं। शरीर में कुछ भी होवे, परन्तु आत्मा की भावना रखना- **— जय गुरुदेव!**

दिनाँक - 25-1-94

प्रत्येक द्रव्य-गुण अनादि-अनन्त कायम रहता हुआ, एक पर्याय का उत्पाद — एक पर्याय का व्यय-करता रहा है-कर रहा है और करता रहेगा — यह महामन्त्र है।

इस मन्त्र का यथार्थरूप से ध्यान आते ही संसार का अभाव, मोक्षमार्ग की शुरुआत, फिर क्रम से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वस्तु विचारत ध्यावतें, मन पामें विश्राम; रस स्वादत सुख उपजै, अनुभव याकौ नाम॥ अनुभव चिन्तामणि रतन, अनुभव है रसकूप; अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्षस्वरूप । **जय गुरुदेव - जय गुरुदेव**

समाचार दर्शन

तत्त्वज्ञान के सजग प्रहरी का अवसान
'डण्डावाले' पण्डितजी के नाम से सुविख्यात
पण्डित कैलाशचन्द्र जैन का चिरवियोग

अलीगढ़ : सम्पूर्ण देश-विदेश की दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज में डण्डावाले पण्डितजी के दुलारे विशेषण से पहचाने जानेवाले वयोवृद्ध विद्वान् पण्डित कैलाशचन्द्र जैन अब हमारे बीच नहीं रहे।

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अनन्य उपासक; पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त; तीर्थधाम मङ्गलायतन के स्वप्न दृष्टा अध्यात्म के मनीषी वयोवृद्ध विद्वान पण्डित कैलाशचन्द्र जैन का, वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की आराधनापूर्वक दिनांक 19 दिसम्बर 2012 को प्रात: 10.45 बजे पर अत्यन्त जागृतिपूर्वक देहपरिवर्तन हुआ है।

अपने उपकारी पूज्य पण्डितजी के देह-परिवर्तन के समाचार जैसे ही संचार माध्यमों के माध्यम से देश-विदेश में स्थित साधर्मीजनों को प्राप्त हुए सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज में शोक की लहर दौड़ गयी। सैकड़ों की संख्या में विभिन्न माध्यमों से शोक-संवेदनाएँ प्राप्त हुईं और अभी भी प्राप्त हो रही हैं।

पण्डितजी के पार्थिव शरीर को उनके निवास विमलांचल में अन्तिम दर्शनों के लिये रखा गया, जहाँ लगातार णमोकार मन्त्र एवं वैराग्य-भावना आदि के पाठ से वैराग्यपूर्ण वातावरण बना रहा। अन्त में सायं काल सैकड़ों साधर्मियों, विद्वानों, मङ्गलार्थी छात्रों, अतिथियों एवं स्थानीय सामाजिक / राजनैतिक बन्धुओं की उपस्थिति में अन्तिम संस्कार विधि मन्त्रोच्चारपूर्वक सम्पन्न की गयी। उस समय भी चारों ओर से णमोकार मन्त्र एवं वैराग्य-भावनाओं की धुन चलती रही।

दिनांक 21 दिसम्बर 2012 को सर्व प्रथम लख्मीचन्द पाण्ड्या जिनमन्दिर, अलीगढ़ में एक विशाल वैराग्यसभा आयोजित की गयी, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने आदरणीय पण्डितजी के बहुआयामी व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए, उनके निधन को सम्पूर्ण जैन समाज की अपूरणीय क्षति के रूप में स्मरण किया। तत्पश्चात् प्राप्त हुए संवेदना-सन्देश पढ़कर सुनाये गये। अन्त में शान्तिपाठ और णमोकार मन्त्रपूर्वक इस श्रद्धांजलि सभा का विसर्जन किया गया।

इसी दिन दोपहर 2.00 बजे तीर्थधाम मङ्गलायतन परिसर में स्थित आचार्य

कुन्दकुन्द प्रवचनमण्डप में वैराग्य-सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सर्व प्रथम बारहभावना पाठ, तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का वैराग्य सी.डी. प्रवचन लगाया गया। प्रासंगिक वैराग्यमय उद्‌बोधन बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ़ ने प्रदान किया। पण्डितजी के जीवन पर आधारित 'पण्डित कैलाशचन्द्र जैन : गौरवगाथा' वीडियो वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया। जिसमें समागत अतिथियों ने पण्डितजी के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को प्रत्यक्ष देखा।

उपस्थित जनसमुदाय को पण्डितजी का सम्पूर्ण जीवन-परिचय प्रदान किया गया और साथ ही सम्पूर्ण देश-विदेश से प्राप्त मुमुक्षु समाज एवं संस्थाओं के संवेदना सन्देशों को पढ़कर सुनाया गया। प्राप्त सन्देशों की संख्या इतनी अधिक थी कि मात्र कुछ सन्देशों के वाचनोपरान्त शेष का नामोल्लेख कर सन्तोष करना पड़ा। यह इस बात को प्रतिध्वनित करता है कि आदरणीय पण्डितजी, सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज में किस गहराई तक पहुँचे हुए हैं।

तत्पश्चात् पण्डितजी के परिवारीजनों द्वारा उनकी पुण्यस्मृतिस्वरूप दिगम्बर जैन मन्दिरों, संस्थाओं, पत्र-पत्रिकाओं के लिए दानराशि की घोषणा की गयी।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से दिगम्बर जैन समाज एवं संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ-साथ मुमुक्षु मण्डलों, मुमुक्षु संस्थाओं और पण्डित से उपकृत उनके शिष्यवर्ग की आशातीत उपस्थिति थी। सभी आगन्तुक साधर्मीजनों को पण्डितजी के संकलित प्रवचनों का संकलन तथा आत्महितकारी सम्बोधन का संकलन 'मङ्गल देशना और मङ्गल सम्बोधन' ग्रन्थ भेंटस्वरूप प्रदान किये गये।

पण्डितजी के उपकारों एवं उनके प्रति समर्पणभाव को अभिव्यक्त करता हुआ मङ्गलायतन टाइम्स का एक वृहद् विशेषांक शीघ्र प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें उनके जीवन से सम्बन्धित सामग्री के साथ-साथ उनके सम्बन्ध में प्राप्त अहोभाव आदि प्रकाशित किये जायेंगे।

पण्डितजी के देह-परिवर्तन से सम्पूर्ण देश-विदेश में शोक की लहर

स्थान-स्थान पर श्रद्धांजलि सभायें आयोजित

अलीगढ़ : पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के देह-परिवर्तन का समाचार पाते ही सम्पूर्ण देश-विदेश में अनेक स्थानों पर वैराग्यसभा आयोजित कर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करने के समाचार हमें निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं। कतिपय महत्वपूर्ण समाचार इस प्रकार हैं-

भीलवाड़ा : पण्डितजी के देह-परिवर्तन के समाचार प्राप्त कर भीलवाड़ा में नवनिर्मित सीमन्धर जिनालय में एक विशाल वैराग्यसभा आयोजित की गयी, जिसमें पण्डितजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके चिरवियोग को एक अपूरणीय क्षति के रूप में याद किया गया। विदित हो कि भीलवाड़ा स्थित इस जिनमन्दिर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 24 से 30 दिसम्बर 2012 तक आयोजित हुआ है और यहाँ संचालित छात्रावास का नामकरण पण्डित कैलाशचन्द्र जैन विद्यार्थीगृह के नाम से पूर्व में ही किया जा चुका है। जिसमें अभी दस विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

बिजौलियां : श्री सीमन्धर जिनालय बिजौलियां में मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन के सदस्यों द्वारा विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्री छगनलाल जैन, श्री रमेशचन्द धनोपिया, श्री मुकेश जैन इत्यादि ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किये।

देहरादून : दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, देहरादून द्वारा विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्री सी.एस. जैन, श्रीमती वीना जैन, श्री नेमचन्द जैन, श्री गोपीचन्द जैन, श्री सुभाषचन्द्र जैन, श्री एस. के. जैन इत्यादि ने पण्डितजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विशेष प्रकाश डाला। इस अवसर पर दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुकमालचन्द्र जैन, लाइंस क्लब इण्टरनेशनल के श्री सुनील जैन, भारतीय जैन मिलन की ओर से उपाध्यक्ष श्री नेमचन्द जैन, श्री अनन्तकुमार जैन एडवोकेट, श्री पी.के. जैन रुड़की, श्री संदीप जैन, सहारनपुर, श्रीमती शीतल शाह, लन्दन, पण्डित अशोककुमार लुहाड़िया अलीगढ़ ने भी अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल की साधर्मी बहिनों ने श्रद्धांजलि वन्दना तथा वीतराग विज्ञान पाठशाला की बालिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया। सभा का संचालन डॉ. संजीवकुमार जैन ने किया।

इनके अतिरिक्त अनेक स्थानों से श्रद्धांजलि सभाओं के आयोजन के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। जिन्हें मङ्गलायतन टाइम्स में प्रकाशित किया जायेगा।

पण्डितजी के देहपरिवर्तन के अवसर पर प्राप्त संवेदना सन्देश

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के देहपरिवर्तन से देश-विदेश का सम्पूर्ण तत्त्वप्रेमी समाज उद्वेलित है। उनके प्रति अहो भाव व्यक्त करते हुए, अपने संवेदना सन्देश अनेक साधर्मियों, संस्थाओं, विद्वानों, राजनीतिज्ञों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने प्रेषित किये हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

अलीगढ़ : दिगम्बर जैन महासमिति, अलीगढ़ सम्भाग द्वारा हर्षकुमार, हेमन्तकुमार जैन; श्री जगवीरकिशोर जैन, सदस्य विधान परिषद्; तहसील राजस्व बार एसोसिएशन तहसील कोल, अलीगढ़ द्वारा श्री आर.पी. दीक्षित, अध्यक्ष; पुरातन छात्र समिति, अलीगढ़ द्वारा श्री प्रदीप के. गुप्त; उत्तरांचल दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमैटी, अलीगढ़ द्वारा श्री शैलेन्द्र जैन, अध्यक्ष; दिगम्बर जैन महासमिति (महिला इकाई) अलीगढ़ द्वारा श्रीमती सरिता जैन अध्यक्ष, श्रीमती नीना जैन, महामन्त्री; जयकल्याणश्री हिन्दी मासिक पत्र, द्वारा डॉ. राजीव प्रचण्डिया, सम्पादक; दिगम्बर जैन महासमिति उ.प्र., उत्तरांचल द्वारा श्री विपिनस्वरूप जैन, अध्यक्ष; अलीगढ़ उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल द्वारा श्री ओ.पी. राठी, नगर अध्यक्ष; जैन मिलन महिला मण्डल, अलीगढ़ द्वारा वीरांगना मनोरमा जैन, मन्त्री; दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा श्री रामकुमार जैन, महामन्त्री; जैन मिलन वर्द्धमान, अलीगढ़ द्वारा श्री कुनाल जैन,मन्त्री; जैन मिलन सिद्धार्थ, अलीगढ़ द्वारा श्रीमती बीना जैन, पूर्व मन्त्री एवं श्री हर्षकुमार जैन, पूर्व अध्यक्ष; श्री एस.के. जैन पब्लिक स्कूल, अलीगढ़ द्वारा श्री सुरेन्द्रकुमार जैन; जैन मिलन, अलीगढ़ नगर द्वारा श्री सुरेशकुमार जैन, अध्यक्ष एवं श्री विनोदकुमार जैन मन्त्री; दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा श्री ज्ञानेन्द्र जैन, अध्यक्ष एवं श्री पंकज जैन, मन्त्री; गंगेरवाल जैन सभा द्वारा श्री नमोशंकर जैन, अध्यक्ष एवं श्री राजकुमार जैन, मन्त्री; श्री उदयसिंह जैन कन्या इण्टर कॉलेज, अलीगढ़ द्वारा प्रधानाचार्या; अलीगढ़ उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल द्वारा श्री भूपेन्द्र वार्ष्णेय, महामन्त्री; श्री बाबूलाल जैन इण्टर कॉलेज, अलीगढ़ द्वारा प्रधानाचार्य; भारतीय जैन मिलन, क्षेत्र संख्या-1, अलीगढ़ द्वारा वीर नरेशकुमार जैन, अध्यक्ष; दिल्ली पब्लिक स्कूल, अलीगढ़ द्वारा श्रीमती शुभा नारायण, प्रधानाचार्या; मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा श्री एस. सी. जैन, कुलपति; श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा सुश्री पूनम बजाज, सचिव; दिगम्बर जैन महासमिति (पुरुष एवं महिला प्रकोष्ठ) अलीगढ़ द्वारा श्रीमती सावित्री जैन एवं श्री सुरेशचन्द्र जैन; बाबूलाल जैन पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अलीगढ़ द्वारा श्री बाबूलाल जैन; हरीसन इण्टर प्राइजेज, अलीगढ़ द्वारा श्री विमलप्रसाद, प्रदीप जैन; जैन मिलन सिविल लाइन्स, अलीगढ़ द्वारा वीर अनुपम दया कृष्ण जैन, मन्त्री; अलीगढ़ मैटल मर्चेन्ट एसोसिएशन, अलीगढ़ द्वारा श्री जगदीशप्रसाद, अध्यक्ष एवं श्री संजय वार्ष्णेय, मन्त्री; जैसवाल जैन सभा, अलीगढ़ द्वारा श्री सुभाषचन्द्र जैन, अध्यक्ष; जैन जागृति संघ, अलीगढ़ द्वारा श्री कश्मीरचन्द्र जैन, अध्यक्ष एवं श्री सुरेशचन्द्र जैन, मन्त्री; महाराजा अग्रसेन

सेवा समिति, अलीगढ़ द्वारा श्री दिनेशचन्द्र अग्रवाल, अध्यक्ष एवं श्री राजीवकुमार, मन्त्री; श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा डॉ. अरुणकुमार दीक्षित, प्राचार्य; अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, अलीगढ़ द्वारा श्री विवेक बंसल, सचिव; गाँधी नेत्र चिकित्सालय ट्रस्ट, अलीगढ़ द्वारा डॉ. देवेन्द्रकुमार, सचिव; नगर पंचायत, बेसवाँ अलीगढ़ द्वारा श्री संजय अग्रवाल, चेयरमैन; डॉ. दिव्या मधुप लहरी, अलीगढ़; श्री शान्ति सागर जैन धर्मार्थ औषधालय, अलीगढ़ द्वारा वीर कुमार जैन, मन्त्री; कृष्णा इण्टरनेशनल स्कूल, अलीगढ़ द्वारा श्री हरीशचन्द्र सिंघल, संरक्षक एवं श्रीमती बरखा गुप्ता, प्रधानाचार्य; नगर निगम, अलीगढ़ द्वारा श्रीमती शकुन्तला भारती, महापौर; श्री लक्ष्मणप्रसाद, अलीगढ़; श्री अल्डो क्वेंडावल्ला, मैंनेजिंग डायरेक्टर, पावना जॉडी, अलीगढ़; तीर्थधाम मङ्गलायतन अलीगढ़ द्वारा समस्त विद्वान एवं मङ्गलार्थी छात्र; श्री अजय राजपूत, अलीगढ़; रघुवीर सहाय इण्टर कॉलेज, अलीगढ़ द्वारा मैनेजर एवं प्रधानाचार्य; हैरिटेज इंटरनेशनल स्कूल, अलीगढ़ द्वारा श्री राकेश नन्दन; श्री श्याम पुरुषोत्तम गौशाला समिति, जट्टारी, अलीगढ़; श्री भीमसैन शर्मा, अलीगढ़; श्री मोहन लखमराजू, वाइस चेयरमैन, मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़; श्री के.के. सक्सेना, अलीगढ़; श्री अशोक यादव, अलीगढ़; श्री आशुतोष वार्ष्णेय, अलीगढ़; श्री आनन्द केला, अलीगढ़; डॉ. जी.डी. नीरज, अलीगढ़; श्री रमेश सिंघल, अलीगढ़; श्री हरिप्रकाश अग्रवाल; श्री उपेन्द्र माहेश्वरी, अलीगढ़; डॉ. संजीव, अलीगढ़; डॉ. चितरंजन, अलीगढ़; डॉ. देवेन्द्रकुमार, अलीगढ़; राजेन्द्र मैटल वर्क्स, अलीगढ़; श्री मुकेश उपाध्याय माची, अलीगढ़; श्री टी.सी. अग्रवाल, अलीगढ़; श्री वी.के बाथम, अलीगढ़; श्री बसन्त बाथम, अलीगढ़; डॉ. राजेन्द्र कुमार, कुमार पैथोलॉजी, अलीगढ़; श्री योगेन्द्र, स्क्रूवाले, अलीगढ़; डॉ. अशोककुमार, अशोक पैथोलॉजी, अलीगढ़; श्री अनिल जैन, सिद्धार्थ इंटरनेशनल, अलीगढ़; रामतीर्थ मिशन, अलीगढ़; श्री मनजीत सिंह, रजिस्ट्रार, मंगलायतन यूनिवर्सिटी, अलीगढ़; श्री विनय ओसवाल, अलीगढ़; श्री नेपोलियन, अलीगढ़; श्री बिजेन्द्र जैन, कुमार मैटल्स, अलीगढ़; श्री राकेश अग्रवाल, राधाकृष्णा, अलीगढ़; श्री ललित माहेश्वरी, कनविनयेश ट्रेवल्स, अलीगढ़; श्री दिनेशजी, दिनेश ज्वैलर्स, अलीगढ़; श्री विनोद जैन, खिरनी गेट, अलीगढ़; श्री हर्षकुमार जैन, विक्रम कॉलोनी, अलीगढ़; श्री हाजीजी, अलीगढ़; श्री बॉबी जैन, अलीगढ़; सुश्री पूनम बजाज, अलीगढ़; श्री राकेश अग्रवाल, कैटर्र, अलीगढ़; श्री राजकुमार जैन, प्रशान्त इंटरप्राइजेज, अलीगढ़; श्री विनीत वार्ष्णेय एवं पिता, जिंकवाले, अलीगढ़; एस.एस.पी.

पीयूष मोर्डिया, आई.पी.एस., अलीगढ़; चौधरी बिजेन्द्र सिंह, पूर्व सांसद, अलीगढ़; श्री जयवीर सिंह, अलीगढ़; श्री पंकज सारस्वत, अलीगढ़; श्री वीरेन्द्र जैन, खिरनी गेट, अलीगढ़; श्री मधुप लहरी, अलीगढ़; श्री ज्ञानचन्द वार्ष्णेय, व्यापार टाइम्स, अलीगढ़; श्री अनिल गुप्ता, प्रीमियरनगर, अलीगढ़; श्री शैलेन्द्रजी, सिटी कमिश्नर, अलीगढ़; श्री राजीव महरोत्रा, अलीगढ़।

हाथरस : जिला सूचना अधिकारी, हाथरस द्वारा श्री यतीशचन्द्र जैन; श्री जैन नवयुवक सभा, हाथरस द्वारा अध्यक्ष एवं महामंत्री; प्रेस क्लब, हाथरस द्वारा श्री ललिताप्रसादजी, अध्यक्ष; भारतीय जैन मिलन, हाथरस द्वारा अध्यक्ष एवं महामन्त्री; सूबेदार मेजर श्रीपाल सिंह, भीमनगरिया, हाथरस; श्री अंजय जैन, सासनी; काकाबाबू, हाथरस; सुरजोबाई बालिका इण्टर कॉलेज, हाथरस द्वारा प्रबंधक-प्रधानाचार्य।

देश एवं विदेश से : श्री आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग विज्ञान मण्डल, जबलपुर द्वारा श्री अशोककुमार जैन, अध्यक्ष; श्री दिगम्बर जैन समाज, बुलन्दशहर द्वारा श्री हीरालालजी, मन्त्री; तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद द्वारा श्री सुरेश जैन, चांसलर; श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर द्वारा श्री सुधीर जैन, मन्त्री; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, देहरादून द्वारा समस्त मुमुक्षु मण्डल; अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन (पुरुष-महिला), मेरठ द्वारा समस्त फैडरेशन परिवार; कुन्दकुन्द शिक्षण केन्द्र ट्रस्ट, कोटा द्वारा श्री ज्ञानचन्द्र जैन, अध्यक्ष; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, बिजौलियाँ द्वारा समस्त मुमुक्षु मण्डल; श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा द्वारा श्री प्रेमचन्द बजाज, अध्यक्ष एवं पण्डित रतन चौधरी, निदेशक; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, कोटा द्वारा श्री विजयकुमार जैन, अध्यक्ष; आइडल किड्स स्कूल, मुजफ्फरनगर द्वारा श्री पी. के. जैन; श्री सम्मेदशिखरजी विकास समिति, गाजियाबाद द्वारा श्री जीवेन्द्र जैन, अध्यक्ष; श्री 1008 रत्नत्रय दिगम्बर जैन मन्दिर, अलवर द्वारा समस्त मुमुक्षु मण्डल; श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा श्री विमलकुमार जैन, अध्यक्ष एवं ब्रह्मचारी जतीशचन्द्र शास्त्री निदेशक/मंत्री; श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द परमागम मन्दिर ट्रस्ट, सहारनपुर द्वारा श्री संदीप जैन, महामन्त्री; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, ग्वालियर द्वारा श्री महेन्द्रकुमार जैन, अध्यक्ष; अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ग्वालियर द्वारा पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री; पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा डॉ. हुकमचन्द

भारिल्ल, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, ब्रह्मचारी यशपालजी 'अन्नाजी', पण्डित पीयूष शास्त्री; स्वाध्याय मण्डल, राज मौहल्ला, इन्दौर द्वारा श्रीमती प्रमिला जैन; पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन परिवार, बिजौलियाँ; श्री छगनलाल धनोपिया परिवार, बिजौलियाँ; श्री रमेशचन्द्र सोगानी परिवार, कोलकाता; कुन्दकुन्द शिक्षण केन्द्र सीमन्धर जिनालय, कोटा द्वारा श्री ज्ञानचन्द्र जैन; डॉ. किरण शाह, पुणे; श्री सी.एस. जैन, देहरादून; श्री पुरुषोत्तम जैन, देहरादून; श्री निरंजनभाई डेलीवाला, बढ़वान; श्री विपिनभाई बाघर, जामनगर; श्री हसमुखभाई पोपटलाल बोरा, सोनगढ़; बाल ब्रह्मचारी हेमचन्द 'हेम', भोपाल / देवलाली; श्री नारायण शशि शाह; श्री अरविन्द दोशी, गोंडल; श्री कान्तिभाई मोटाणी, मुम्बई; श्री सन्तोष (भाभीमाँ); श्री सी.पी. त्रिपाठी; श्री निखिल मेहता, मुम्बई; श्री आशुतोषकुमार अग्रवाल, नयी दिल्ली; श्री आर. एम. पारेख, स्नेहलता पारेख, पुणे; श्री दिनेश लाटकर; श्री राजा कोठारी, बोटाद; श्री द्विवेश शाह, सुरेन्द्रनगर; श्री अशोककुमार जैन, सतना; डॉ. श्यामा चोना, दिल्ली; श्री निरंजन शाह, मुम्बई; प्रोफेसर जाफरी; श्री बलवान चौहान; श्री चतरसेन जैन, देहरादून; डॉ. भानुप्रताप सिंह, आगरा; श्री विक्की रावत; मनियार परिवार, पुणे; श्री दर्शन मालपानी, औरंगाबाद; डा. ए. के. उप्पल; श्री श्याम सुन्दर; श्री इदु कार्तिक; सुश्री पूजा, आपोलो; प्रो० नित्यानन्द पाण्डे एवं परिवार; श्री राजा एवं परिवार, खण्डवा; प्रो० अशोककुमार, सतना; वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, अजमेर द्वारा पूनमचन्द जैन लुहाड़िया, अध्यक्ष; धनलक्ष्मी, प्रदीप एवं पंकजभाई कामदार, दादर, मुम्बई; श्री सतनाम माथुर, आगरा; श्री विहारी पटेल; श्री दिलीप सुमन; प्रो० एम.पी. जैन, शारदा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा; श्री दीपक देसाई एवं परिवार, सोनगढ़; श्री गगन नारंग, निशानेबाज, दिल्ली; श्री अनिल दुबे; श्री राजेश दौलत; श्री विकास सरावगी, कोलकाता; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, सुरेन्द्रनगर; श्री अजित जैन, बड़ौदा; श्रीमद् राजचन्द्र साधना केन्द्र, राजनगर, कुकमा-कच्छ; श्री सिद्धार्थ-पूर्णा, सम्यक-फॉरम, आयुष-नियति, दर्शन; श्री राजीव गंगवाल; श्री राजूभाई वी. शाह; श्रीमती सोनिया एवं प्रमोद गुप्ता; कैप्टन ऊषा बनर्जी; रूपा जयन्त ब्रोकर, मुम्बई; श्री गौरव खन्ना, दिल्ली; शशांक पुत्र डॉ. जी.डी. शेखर; श्री आशीष गोयल; श्री किशोर एवं मनु कोठकर; श्री रमेश भण्डारी, बैंगलोर; श्री अविनाश सिंह; श्री वाई.के.गुप्ता, शारदा विश्वविद्यालय; श्री अनिल टण्डन; डॉ. आर.के. देशपाण्डे; श्री दीपक बागुल; श्री सुनील सागर; श्री एच.ए.एस. जाफरी; श्री बलवान चौहान; श्री आर.एम. पारेख एवं स्नेहलता पारेख; श्रीमती जैनी अईवारा; श्री विजय लुहाड़िया, अहमदाबाद;

श्री संजीव राजा; श्री एस. बाबा, दिल्ली; श्री पम्पी जैन, कन्नौज; श्री राजेशभाई, हैदराबाद; श्रीमती लीला नाहर, पुणे; श्री बी. आर. लोहिया, दिल्ली; श्री देव अरोरा; श्री अंकुर बंसल; श्री श्रीकान्त गदिली; श्रीमती नैनाबेन, बैंगलोर; श्री ओ. जे. मनियार; श्रीमती संजय टिकू; श्री हितेनभाई, मुम्बई; श्री अक्षय दोशी, मुम्बई; श्री जीतू मोदी, सोनगढ़; डॉ. सुभाष गुप्ता; श्री दीनदयालजी, पिलकुआ; श्री राजकुमार अवस्थी; श्री अशोक सेठी, भीलवाड़ा; कविताबेन, मुम्बई; श्री हर्षवर्धन जैन, औरंगाबाद; कोकिलाबेन, सोनगढ़; डॉ, कमलेशजी, रुड़की; श्री आलोक जैन, कानपुर; श्री अनुराग जैन, सी.ए. माताजी, ललितपुर; श्री सुरेश जैन, लखनऊ; श्री एस.एम. अशरफ, आई.आर.एस.; श्री अमित जैन, देहरादून; श्री रामकृपालजी; श्रीमती संजना सूद; श्री ऋषभ जैन, छिन्दवाड़ा; श्री संजीव जैन, देहरादून; श्री सतीश जैन, ग्वालियर; श्री सुभाषजी, आगरा; वाइस चांसलर, एएमयू; श्री महमूद-उर-रहमान; श्री ब्रजभूषण, आईपीएस; श्री अरुण दीक्षित; श्री फकीरचन्द परेडा, हरिद्वार; श्री रमेश वासानी; श्री दीपक देवगन; श्री अजित जैन, दिल्ली; प्रो. अशोक मित्तल; प्रो. एच.एस. यादव; श्री समरन बराल; श्री बॉबी, मुजफ्फरनगर; भारिल्लजी के सुपुत्र श्री परमात्मप्रकाश, मुम्बई; श्री विनीत खण्डेलवाल, गुप्ता न्यूज; गोलू; श्री अच्युतानन्द मिश्रा, गाजियाबाद; श्री यादवरावजी, दिल्ली; श्री विनय सेठी, दिल्ली; श्री कुशवाह साहब; श्रीमती वीना जैन एवं परिवार, देहरादून; श्री रमेश पाण्डे; श्री गुड्डू पंडित, डिबाई; श्री पारस पारेख, पुणे; ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़; श्री पंकज दोशी, मुम्बई; पण्डित वीरेन्द्र जैन, आगरा; श्री अम्बुज जैन, मेरठ; श्री अशोक मिश्रा; श्री सुनील सिंह, लखनऊ; गीता जैन, भोपाल; श्रीमती पल्लवी उपाध्याय; श्री एम.एस. मित्तल; श्री मुकेश जैन, मेरठ; श्री समर्थ मित्तल; श्री विजय बजाज; श्री अचलजी एअरपोर्ट (शान्तिपूजा); श्री आर.के. भटनागर; श्री अरुण जैन, कानपुर; डॉ. अजय गुड्डा, मुरादाबाद; श्रीमती सिंह, आई.टी. कमिश्नर; श्री सुरेश जैन, मुरादाबाद; श्री हेमन्त अग्रवाल; पण्डित विमलदादा झांझरी, उज्जैन; श्री विनोद अरोरा; ए.डी.एम. सिटी; सिटी मजिस्ट्रेट; श्री आदिश जैन, दिल्ली; श्री विनय तिवारी; श्री बजरंग राठौड; श्री एस.एम. अफजल, आई.पी.एस.; श्री एडवेल विकास; श्री सुदीप जैन, दिल्ली; श्री राकेशकुमार मित्तल, लखनऊ; श्री आर.एस. गर्ग; श्री भुवनेशकुमार, आई.पी.एस.; प्रो. पी.बी. मंगला; श्री एस.एस. गुप्ता, पूर्व वी.सी., आगरा विश्वविद्यालय; श्री के.पी. पाण्डे, वाराणसी; श्रीमती नम्रता एवं गीतेश्वर; श्री दीपक हुम्रे; जगदीश पंत; श्री काजल घोष, दिल्ली; श्री ए. के. टंडन;

श्री बी. के. माहेश्वरी; श्री एस.टी. पालीवाल, पूना; श्री हसमुख वोरा, एसजीडी; श्री संजीव कुमार, जी न्यूज; श्री रसिकभाई डगली, घाटकोपर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल; श्री सौभागभाई-लीलाबेन परिवार; श्री पारसमल अग्रवाल, उदयपुर; श्री शुगन जैन परिवार, दिल्ली; सुश्री साईना नेहवाल, बैडमिंटन खिलाड़ी, हरियाणा; श्री भगवान गर्ग; श्री प्रमोद गोयल; श्रमण ज्ञान भारती छात्रावास, मथुरा द्वारा सेठ विजय कुमार, अध्यक्ष; श्री आशीष-शोभना गाँधी, अतुल-मीनाक्षी गाँधी परिवार; श्री दिलीप एवं चन्द्री; प्रो. (डॉ.) वी. के. अग्रवाल, वाइस चांसलर, जगन्नाथ विश्वविद्यालय; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, जामनगर; श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ब्रह्मचारी बसंत दोशी; श्री कान्तीलाल बड़जात्या, रतलाम; पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, मुम्बई; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, उदयपुर; श्री दिगम्बर जैन संघ, सुरेन्द्रनगर; जन कल्याण हेल्थ केयर सेन्टर, नयी दिल्ली; श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जिन मन्दिर, दिल्ली; श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सागर; श्रीमती कमलाबाई जिनेश्वरदास टड़ैया, दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन ट्रस्ट, ललितपुर; मोहिन्तारा हास्पीटल द्वारा डॉ. किरण शहा; श्री मनोज सहानी, गलगोटिया विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा; श्री सिद्धार्थ एवं प्रीति; पण्डित नेमीचन्द्र जैन, ग्वालियर; श्री अनिलकुमार पाठोदी एवं आशीषकुमार पाठोदी, बड़नगर; श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, ग्रेटर ग्वालियर द्वारा श्री महेन्द्रकुमार जैन, अध्यक्ष एवं महेशचन्द जैन, कोषाध्यक्ष; अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ग्रेटर ग्वालियर द्वारा शुद्धात्म शास्त्री, महामन्त्री; श्री महावीर विद्यानिकेतन द्वारा श्री नरेश सिंघई, संयोजक; श्री चन्द्रप्रभ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा अध्यक्ष एवं मन्त्री।

विदेश से : श्री बच्चूभाई-सरोजबेन, लन्दन; डॉ. किरीट गोसलिया, यू.एस.ए.; श्री अशोक पाटनी, सिंगापुर; श्री जयन्तीलाल डी. गुडका परिवार, लन्दन; श्रीमती पुष्पा-भीमजीभाई शाह, लन्दन; श्री चन्द्रकान्त शाह, लन्दन; श्री प्रफुल्ल डी. राजा, नैरोबी; श्री हसमुख एम. शाह, लन्दन; श्रीमती शीतल शाह, लन्दन; पद्माजा, हाई कमीशन ऑफ इण्डिया, लन्दन; श्री लक्ष्मीचन्द भगवानजी शाह एवं सूर्यकलाबेन, लन्दन; संदीप शाह एवं स्मिताबेन, मिलन शाह एवं बीजलबेन, लन्दन; श्री रुतेश एवं शुचिता, लन्दन; मामा, लक्शमवर्ग, जर्मनी; मीना एवं सुशीलाबेन सोमचन्द भगवानजी परिवार, लन्दन; श्री सुरेन्द्र / मंजू, लन्दन; श्री ब्रूनो, इटली; श्री ज्ञानचन्द-कंचनजी, कनाडा।

तीर्थधाम मङ्गलायतन एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में

वस्त्रनगरी भीलवाड़ा में दिगम्बरत्व का जयघोष

ऐतिहासिक पञ्च कल्याणक अभूतपूर्व सफलता से सम्पन्न

भीलवाड़ा : वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति एवं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग से निर्मित श्री सीमन्धरस्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर में विराजमान होनेवाले जिनबिम्बों का श्री आदिनाथ पञ्च कल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 24 से 30 दिसम्बर 2012 तक ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। देश-विदेश एवं समीपवर्ती क्षेत्रों से हजारों की संख्या में पधारे हुए साधर्मीजनों ने पूज्य गुरुदेवश्री के माङ्गलिक सी.डी. प्रवचनों, आत्मार्थी विद्वानों की स्वाध्याय एवं गोष्ठियों, पञ्च कल्याणक की इन्द्रसभा एवं राज्यसभा, तथा जिनेन्द्र पूजनादि का विशेष लाभ प्राप्त किया।

विद्वत् समागम : इस पावन अवसर पर पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर; बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़; पण्डित वीरेन्द्रकुमार जैन, आगरा; डॉ. राकेश जैन, नागपुर; पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, बिजौलियां; पण्डित कमलकुमार, पिडावा; पण्डित महावीरप्रसाद टोकर; पण्डित दिलीप जैन, इन्दौर; पण्डित ऋषभ जैन, दिल्ली; पण्डित जयकुमार जैन, कोटा; पण्डित चेतन जैन, कोटा इत्यादि विद्वानों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

प्रतिष्ठा विधि बालब्रह्मचारी पण्डित अभिनन्दनकुमार शास्त्री, खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित शान्तिकुमार पाटील, पण्डित राजकुमार जैन, बांसवाड़ा; पण्डित अजीत जैन, अलवर; पण्डित ऋषभ शास्त्री, छिन्दवाड़ा; पण्डित संजीव जैन, दिल्ली; पण्डित मनीष जैन, पिडावा; पण्डित अश्विन नानावटी; पण्डित अनिल धवल; पण्डित दीपक धवल के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुई। मञ्च संचालन का कार्यभार पण्डित संजय जैन शास्त्री, मङ्गलायतन तथा प्रतिष्ठा महोत्सव के निर्देशन का कार्य पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन और सहनिर्देशक का कार्य पण्डित पीयूष जैन शास्त्री, जयपुर ने सम्हाला।

प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वजारोहण श्री कमलकुमार बड़जात्या परिवार, मुम्बई द्वारा किया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव का मञ्च एवं पाण्डाल अत्यन्त नयनाभिराम था। सम्पूर्ण नगर जिनमन्दिर, आचार्य कुन्दकुन्ददेव एवं पूज्य गुरुदेवश्री के चित्रों से सुशोभित द्वारों से शोभायमान था। प्रतिदिन के कार्यक्रमों में जिनेन्द्र-पूजन, पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, स्वाध्याय, गोष्ठियाँ, इन्द्रसभा एवं राज्यसभा इतने मनभावन थे कि सर्दी के मौसम के बावजूद भी पाण्डाल खचाखच भरा रहता था।

इस अवसर पर निकाली गयी शोभायात्राएँ भीलवाड़ा नगर के इतिहास में अपना कीर्तिमान रचती सी प्रतीत होती थी। जन्मकल्याणक शोभायात्रा एवं जन्माभिषेक के प्रथम कलश का सौभाग्य श्री अजितप्रसाद जैन परिवार, दिल्ली एवं पालना झूलन का प्रथम सौभाग्य श्री प्रेमचन्द बजाज परिवार, कोटा को प्राप्त हुआ।

मुनिराज ऋषभकुमार के आहारदान का सौभाग्य स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन परिवार के द्वारा डॉ. किरीट गोसलिया, अमेरिका को प्राप्त हुआ एवं मुनिराज को बत्तीस ग्रास आहार की मर्यादा का परिपालन किया गया।

दीक्षावन में वैराग्य प्रवचन बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी द्वारा प्रदान किया गया। तो दिव्यध्वनि प्रसारण में पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी का रसपान कर सभी आगन्तुक मन्त्रमुग्ध हुए।

जिनमन्दिर में उल्लेखनीय ह्रीं की रचना में विराजमान चौबीस रत्नमयी जिनबिम्बों की स्थापना मुमुक्षु समाज में एक ऐतिहासिक रचना बनी। मूलनायक सीमन्धर भगवान को वेदी में विराजमान करने का सौभाग्य शारदाबेन शान्तिलाल शाह, अनन्तराय अमुलखराय सेठ, जयेशभाई अक्षयभाई दोशी परिवार को प्राप्त हुआ। जिनमन्दिर का उद्घाटन श्रीमती किरण धर्मपत्नी स्वर्गीय सुरेश बघेरवाल परिवार भीलवाड़ा को तथा स्वाध्याय मन्दिर का उद्घाटन हितेनभाई, अक्षयभाई मुम्बई को प्राप्त हुआ। जिनमन्दिर में जिनवेदी पर आदिनाथ एवं महावीर भगवान के विराजमान का सौभाग्य चाँदमल लुहाड़िया परिवार भीलवाड़ा एवं डॉ. पी. के. जैन भीलवाड़ा ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर हजारों रुपये का सत्साहित्य, पूज्य गुरुदेवश्री के डी.वी.डी. प्रवचन, विद्वानों के डी.वी.डी. प्रवचन जन-जन तक पहुँचे। स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की चार कृतियाँ — मङ्गल देशना, मङ्गल सम्बोधन, मङ्गल दैनन्दिनी, मङ्गल पत्राञ्जलि तथा हरिवंशपुराण वचनिका, नियमसार, नियमसार अनुशीलन, समयसार वीडियो डी.वी.डी., श्री सिद्धचक्र विधान (अर्थ सहित) का विमोचन हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों का लगभग चालीस समाचार पत्रों में सचित्र प्रकाशन हुआ जिसका सम्पूर्ण श्रेय मीडिया प्रभारी श्री पवन अजमेरा, भीलवाड़ा एवं पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन बिजौलियां को है। सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये भीलवाड़ा नगर की युवा टीम एवं स्थानीय समाज के साधर्मी बन्धुओं का उल्लेखनीय योगदान रहा।

आगन्तुक अतिथियों के आवास एवं भोजन की वात्सल्ययुक्त व्यवस्था ने सभी का मन मोह लिया। इस प्रकार वीतराग शासन की जयघोष करता हुआ यह मङ्गल महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

पञ्च परमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन

तीर्थधाम मङ्गलायतन : वयोवृद्ध विद्वान पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की पुण्य-स्मृति में उनके परिवार द्वारा दिनांक 01 जनवरी 2013 को तीर्थधाम मङ्गलायतन स्थित श्री बाहुबली जिनमन्दिर में पञ्च परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्व प्रथम प्रात:काल नित्य नियम-पूजन तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री का माङ्गलिक सी.डी. प्रवचन और इसके बाद पण्डित संजय जैन शास्त्री, पण्डित आशीष जैन शास्त्री एवं मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा पूजन-विधान का आयोजन अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर पण्डितजी के सभी परिवारीजनों, रिश्तेदारों एवं अनेक साधर्मियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

वैराग्य समाचार

अजमेर : श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं तीर्थधाम ऋषभायतन के संस्थापक अध्यक्ष श्री पूनमचन्द जैन लुहाड़िया का देह-परिवर्तन अत्यन्त शान्त परिणामों सहित, भगवती आराधना इत्यादि ग्रन्थों की स्वाध्यायपूर्वक हुआ है। आप जैन तत्त्वज्ञान के गहन अभ्यासी एवं विभिन्न तत्त्व प्रचारात्मक गतिविधियों के संचालक थे। तीर्थधाम मङ्गलायतन के संस्थागत ट्रस्टी के रूप में आपका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

भोपाल : जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वान एवं ब्रह्मचर्य आश्रम के भूतपूर्व अधिष्ठाता पण्डित राजमल जैन का देह-परिवर्तन अत्यन्त आत्मजागृतिपूर्वक हुआ है। आपके देह-विलय से मुमुक्षु मण्डल भोपाल की अपूरणीय क्षति हुई है।

इन्दौर : श्री जिनेन्द्रकुमार पाटोदी का शान्तभाव से देहावसान हुआ है। आप पण्डित अशोक लुहाड़िया मङ्गलायतन के श्वसुर थे।

विदिशा : पण्डित जवाहरलाल जैन बड़कुल का आत्मजागृतिपूर्वक देहावसान हुआ है। आप अत्यन्त सादगीयुक्त व्यक्तित्व के साथ ही करणानुयोग के मर्मज्ञ विद्वान थे।

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार इष्टवियोग की इस विषम परिस्थिति में आपके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा के अभ्युदय की मंगल कामना करता है।

पवन एवं आशा जैन
विमलांचल, हरीनगर
अलीगढ़-202001

आभाराभिव्यक्ति

हमारे पूज्य पिताजी पण्डितप्रवर श्री कैलाशचन्द्र जैन, देव-शास्त्र-गुरु की सम्यक् आराधनापूर्वक जीवन के शताधिक वर्ष पूर्ण कर बुधवार, 19 दिसम्बर 2012 को अत्यन्त निर्मल एवं शान्त परिणामों के साथ देह-विलय को प्राप्त हुए।

पूज्य पिताजी ने न केवल पिता अथवा परिवार के मुखिया के समस्त उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य पूर्ण किये, अपितु हमारे जीवन को सत् धर्म के संस्कारों से संस्कारित करके हमें सन्मार्ग का पथिक भी बनाया; हमें अध्यत्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और उनके जीवनदर्शन से परिचित कराया, एवं अपने धन-वैभव के साथ-साथ अपनी देशना, पत्रों, लेखों, सम्बोधन एवं साहित्य के रूप में अपने जीवन की सम्पूर्ण निधि भी हमें वसीयत में दे गये।

इस प्रकार पूज्य पिताजी ने तो चिरस्मरणीयरूप में अपना कर्तव्य पूर्ण किया, अब हमारा दायित्व है कि हम उनके दिखाये मार्ग पर चलें और यह जीवन, निजात्मस्वरूप देव-शास्त्र-गुरु की सम्यक् आराधना के साथ पूर्ण कर पूज्य पिताश्री की भाँति हम भी समाधिमरण को प्राप्त हों।

हमारी इस कठिन परीक्षा की घड़ी में, इस महान वैराग्य प्रसङ्ग पर, आप व्यक्तिगतरूप से अथवा पत्र, ई-सन्देश, फोन आदि के माध्यम से एक सम्बल के रूप में हमारे साथ रहे। आपकी उपस्थिति अथवा सन्देश ने हमें मानसिक बल दिया है, साथ ही पूज्य पिताश्री के दिखाये मार्ग पर निरन्तर बढ़ते रहने की प्रेरणा भी दी है।

मैं, मेरा परिवार और समस्त मङ्गलायतन परिवार, आपकी सद्भावना एवं अपनत्वभावना के प्रति नतमस्तक हैं और सदैव आपके आभारी रहेंगे। मेरा आपसे व्यक्तिगत विनम्र अनुरोध है कि आप यथासम्भव समय निकालकर तीर्थधाम मङ्गलायतन पधारते रहें और मेरे अनुज मुकेश एवं पुत्र स्वप्निल का मार्गदर्शन करते रहें।

परिवार में सभी को यथायोग्य सादर प्रणाम / जयजिनेन्द्र निवेदन करियेगा। आपका पुनः पुनः हार्दिक आभार।

सादर,

- मुकेश जैन
- स्वप्निल जैन

पवन एवं आशा जैन